चित्रकार मानक का पहाड़ी चित्रकला में योगदान –एक समीक्षा

डॉ0 वेद पाल सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
ललित कला विभाग,डी0ए0वी0 कॉलेज,
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

सारांशिका

मुगल व राजस्थानी लघुचित्र शैली के बाद पहाड़ी शैली विश्व की कलाओं में अपनी सौम्यता एवं सौन्दर्य के लिए विशेष स्थान रखती है इसके अन्तर्गत बसोहली, गुलेर, कांगड़ा, चम्बा, मण्डी, गढ़वाल, जसरोटा, बिलासपुर, तथा जम्मू केन्द्र आते हैं। इनमें गुलेर पहाड़ी शैली का जनक एवं मुख्य केन्द्र रहा। यह राज्य अपने कला प्रेमी राजाओं और उनके महानतम चित्रकार पण्डित सेऊ व उनके पुत्रों मनकू व नैनसुख के कारण जाना गया, जिन्होंने इस शैली को न केवल शिखर तक पहँचाया, अपितु एक चित्रण परम्परा के रूप में अपनी अगली पीढ़ी के द्वारा आसपास के राज्यों तक विस्तारित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में गुलेर चित्रशैली के मुख्य चित्रकार मानक की चित्र शैली एवं चित्रों की विशेषताओं व पहाड़ी कला में योगदान पर विश्लेषण किया गया है। इस हेतु विभिन्न पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया।

मुख्य शब्दः दैदीप्यमान, तरखाण, मुसव्विर, परदाज।

प्रस्तावना

मानक पण्डित सेऊ के ज्येष्ठ पुत्र थे, जिनको मनकू, मानक तथा मानकों के नाम से भी जाना जाता है। इनका जन्म 1700 ई0 माना गया है। जबकि कार्ल खण्डालावाला के अनुसार इनका जन्म 1717–1718 ई0 के आसपास है। मानक शब्द संस्कृत के माणिक्य रत्न से बना है, जिसको पहाड़ी भाषा में मनकु कहा जाता है। मानक के सम्बन्ध में बहुत कम प्रमाण उपलब्ध हैं, 1960 के दशक में डॉ0 बी0एन0 गोस्वामी ने पण्डों की बहियों द्वारा पहाड़ी चित्रकारों के विषय में महत्वपूर्ण खोज की जिससे गुलेर चित्रकार परिवार प्रकाशा में आया, मानक के बारे में सर्वप्रथम उल्लेख हरिद्वार में पण्डो की उन्ही बहियों में टाकरी लिपी में लिखित यह लेख मानक के हाथ का लिखा मिला है –

"मणकू तरखाण वासी गुलेर के लिखतं

बेटे पण्डित सेऊ को पोता हसनु का संवत 1793"

इस लेख से हमें मात्र इतनी जानकारी मिलती है कि सम्वत् 1793 (1736 ई0) में मानक चित्रकार गुलेर में कार्यरत थे मानक ने हरिद्वार में गंगा स्नान के लिए परिभ्रमण के दौरान बही में उपरोक्त लेख दर्ज किया इसमें उसने अपने पिता तथा दादा का नाम अंकित किया है। मानक के चचेरे भाई ग्वाल, टेढा, पुन्नु भी चित्रकार थे, जो गुलेर दरबार के लिए चित्रांकन करते थे। हरिद्वार के पण्डो की बही में सर्वप्रथम मानक का लेख दर्ज है। इसका अर्थ है कि जो समूह हरिद्वार गया था, उसमें मानक वरिष्ठ व्यक्ति था। इस बही के अलावा अन्य सूत्रों से भी मानक के बारे में ज्ञात हुआ है कि उसके दो पुत्र थे फत्तू तथा खुशाला।

मानक के जो व्यक्ति चित्र प्राप्त हैं उनमें एक व्यक्तिचित्र में उसे लगभग चालीस वर्षीय चित्रित किया गया है, नैन सुख को उसका छोटा भाई लिखा गया है। उसका शरीर पतला पर सुगठित है। उसमें सफाई से बनी दाढ़ी चित्रित की गई है तथा भूरी मूछें हैं। दाढ़ी में दाएँ कान के पास ग्रे धूमिल कुँए के रंग का एक पैच है। वह सीधा देख रहा है तथा चेहरे पर भाव स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में दिखाई पड़ते हैं। माथे पर तिलक है जो दो बार अर्धचन्द्राकार बना है तथा उसके नीचे बिंदी लगी है। वह देवी का अनन्य भक्त दिखाई देता है। उसने वस्त्रों में सफेद जामा पहना है जो दाँई बाजू के नीचे गाँठ से बाँधा गया है। उसने जो पगड़ी पहनी है वह पीछे की ओर ढली हुई है तथा सफाई से बाँधी गई है। उसके गले में एक माला है जो छाती तक पड़ी हुई है। बिना रंग के बने इस चित्र पर टाकरी भाषा में मानकु मुसब्बिर मिश्र लिखा है। मुसब्बिर पारसी शब्द है जिसका अर्थ है चित्रकार तथा मिश्र का अर्थ है पण्डित ब्राह्मण।

जो दूसरा व्यक्तिचित्र मानक का है उसमें उसे खड़ा दिखाया गया है। यह राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहित है। यह एक रेखाचित्र है इसमें उसने दाँऐ हाथ में एक छड़ी पकड़ी हुई है। इसके शीर्ष पर श्री चितेरा मानक लिखा है। इसमें बदन कुछ भारी तथा वृद्ध है। इसमें मूछें काली तथा दाढ़ी अन्य व्यक्तिचित्रों से अधिक सफेद है। इसमें उसे 55 या 60 वर्ष की आयु का चित्रित किया गया है। इस चित्र में उन्होनें जामा पहना है। उन्होनें एक चादर बाँए कंधे पर डाल रखी है तथा दाँयी कलाई में एक पहुँची (ब्रेसलेट/कंगन) पहना है। एक अन्य व्यक्तिचित्र मानक चित्रकार का लाहौर संग्रहालय में रखा है, जिसमें उसकी आयु 30 वर्ष के आस–पास है, उसकी दाढ़ी घनी है। यह चित्र 1743 से 1760 ई0 के मध्य बनाया गया लगता है, उस समय राजा गोवर्धन चन्द गुलेर पर शासन कर रहे थे। इस पर मनको चित्रकार लिखा है।

मानक ने अपने पिता से ही चित्रकला की शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की जो इनके कार्यो से स्वतः परिलक्षित होता है। मानक अपने चित्रों में हरित पृष्ठिकाओं पर प्रकृति चित्रण करते थे। उन्होंने अपने चित्रों में आकृतियों के अंकन में जितना परिश्रम किया, उसी मेहनत से उन्होनें पृष्ठभूमि में फूलों से युक्त पौधों और घनें वृक्षों को उकेरा है। पेड़ से लिपटी वल्लरियों के पुष्प हों अथवा आकाश में उड़ते विहग, मानक ने सदैव वास्तविक जीवन्त दृश्यों का चित्रांकन किया है। पेड़ पौधों के अतिरिक्त पक्षियों, जलचरों और वन्य जीवों का भी सजीव अंकन मानक ने किया है। मानक के चित्रों की वर्ण योजना गहरी है। वृक्षों की शाखाऐं घने पत्तों से भरी दृष्टिगोचर होती हैं। ग्रे रंग की नदी पर काली परदाज से

पानी दर्शाया गया है। जो कि सरोवर के किनारे बने कृष्ण–गोपियों का मिलन स्थल लगता है। आकाश में क्षितिज पर महावर या सिंदूर की लालिमा, बहुदा मानक की गीत–गोविन्द चित्रावली में देखने को मिलती है। जो बाद की पीढ़ी के कलाकारों के लिए परम्परा ही बन गई। गोलाईदार ढलानों वाली हरी पहाड़ियों के ऊपरी क्षेत्र पर हल्के पीले या बादामी रंग का हल्का वॉश लगाया है, जो हरी पहाड़ियों में मिश्रित होता हुआ विलीन हो जाता है। मानक के चित्रों में भूमि के धरातल को दर्शाने हेतु मटमैले रंग पर सुनहरे रंग (हिलकारी) का पतला पानी कुशलता से प्रयुक्त हुआ है। मानक के चित्रों में आकृतियों के ओजस्वी चेहरों के कुशल अंकन द्वारा मानक की कलात्मक दक्षता स्वतः झलकती है। व्यक्तिचित्र का चित्रण हो अथवा राधा और गोपिकाओं के चन्द्रमुखी चेहरों के वर्तुलाकार मुखों पर छाया शेड लगाकर बहुत ही महीन किस्म की परदाज लगी है जो चेहरे के रंग में घुलती प्रतीत होती है। वह मानक के चित्रों में दृष्टिगोचर होती है। इस कलाकार को डेढ़ चश्मी चेहरों का अंकन अधिक पसन्द नहीं था।

मानक का व्यक्तित्व काव्यात्मक तथा रोमांटिक था उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि गीत–गोविन्द काव्य पर आधारित श्रृंखला थी जो एक प्राचीन काव्य था। मानक ने अपनी संगीतमय रचनाओं, धड़कते रंगो तथा स्थानीय भूदृश्यों को चुन कर उन्नत तकनीकों के साथ सौन्दर्य शास्त्र की नाजुकता पर सर्वोत्तम रचनाएं की। मानक के गीत–गोविन्द की दो श्रृंखलाएं थी, एक बसोहली में तथा दूसरी कांगड़ा शैली में, जिसकी शुरूआत गुलेर में हुई। इन्होंने कला के क्षेत्र में उग्र विवाद को जन्म दिया। मानक की प्रतिभा का यह केवल छोटा सा उदाहरण है। उसने गुलेर कलम को और भी विकसित कर काँगड़ा तक पहुँचाया।

नारी आकृतियाँ – मानक द्वारा चित्रित नारी आकृतियाँ सभी प्रसाधनों और स्वर्णाभूषणों से सुसज्जित दिखती हैं। प्रायः नारी आकृतियाँ चोली–घाघरा पहने चित्रित हुई हैं। सिर पर केश–राशि भी दिखाई देती है, बेलबूटों के आलेखन युक्त सोने की जरी वाला घाघरा राधा के परिधान में ही चित्रित हुआ है। मानक द्वारा चित्रित नारी आकृतियाँ स्थूल और माँसल देहयष्टि की हैं। गीत–गोविन्द चित्रावली के लिए मानक की अगली पीढ़ी के कलाकारों ने इन्हें आदर्श मानकर अपनी कला को आत्मसात किया। फलतः भागवत् तथा बिहारी सतसई जैसी चित्र श्रृंखलाओं में गोलाईदार चेहरों वाली नारी आकृतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं।

भ्रमर गीत विषयक चित्रों, जिनमें आकाश में पूरे चाँद को दिखाया गया है में मानक की नारी आकृतियों की प्रतिकृति मानों पुनः सजीव हो उठी हों। इन चित्रों को डब्ल्यू. जी. आर्चर नें "मास्टर ऑफ मून लाईट" चित्र श्रृंखला नाम से सम्बोधित किया है मानक ने अपने जीवन काल में कई चित्रों का सृजन किया होगा परन्तु मानक के नाम का उल्लेख केवल तीन चित्रों पर ही हुआ है जिससे उसकी कार्य शैली विदित होती है। इन तीन चित्रों में कृष्ण और गोप बालकों की आँख मिचौली विषयक चित्र अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इस चित्र के पीछे संक्षिप्त सी पंक्ति में मानक का नाम "माणक की लिखी" देवनागरी अक्षरों में लिखित है अर्थात मानक द्वारा चित्रित। चाँदनी रात में पेड़ों के घने झुण्ड तले सुनहरी पृष्ठिका पर आकृतियों का संयोजन है। कृष्ण किशोर अवस्था में हैं तथा हमउम्र ग्वाल बालकों के संग खेलते चित्रित किए हैं। मानक के नाम का उल्लेख एक अन्य चित्र "सरोवर किनारे नायिका" के पीछे फारसी भाषा की पंक्ति में हुआ है। इस चित्र में सरोवर के किनारे स्थित भवन में सोने की चौकी पर बैठी हुक्का पीती नायिका को चित्रित किया गया है। यह चित्र विक्टोरिया एण्ड अलबर्ट संग्रहालय, लंदन में संग्रहित है। चित्र के पीछे निम्न लेख लिखा है ÷

''अज़ माणकू मुस्सविर इनाम यक अंगुरतरी–ए–तिला मय नगीना–ए–पन्ना''

इस लेख से स्पष्ट होता है कि मानक द्वारा चित्रित उपरोक्त नायिका के चित्र पर प्रसन्न होकर उसके आश्रय दाता ने उसे पुरूस्कार में एक पन्ना जड़ित स्वर्ण मुद्रिका (सोने की अंगूठी) दी है। चित्र में नायिका की मुखाकृति पर गुलेर शैली स्वतः ही झलकती है। पहाड़ी चित्रकला में यह परम्परा थी कि चित्रकार अपने नाम के हस्ताक्षर नहीं करते थे। चित्रण कार्य एक पारिवारिक व्यवसाय था तथा पिता, पुत्र संयुक्त रूप से एक ही कार्यशाला में चित्रांकन करते थे। इस प्रकार किसी कार्यशाला से तैयार हुआ प्रत्येक चित्र परिवार के मुखिया के नाम से जाना जाता था। ऐसी ही परम्परा गुलेर तथा कांगड़ा में भी थी। मानक ने भी अपने जीवन के अन्तिम वर्षो में इस प्रकार के चित्रों की रचना की होगी अथवा अपने पुत्रों की चित्र संयोजना को अन्तिम रूप दिया होगा। गीत–गोविन्द श्रृंखला के चित्रों में से कई चित्र गुलेर कलम के तत्वों के लिए मानक का कार्य प्रतीत होते हैं, जबकि अन्य चित्रों में मानक के पुत्रों की कार्यशैली का आभास होता है। सौ से भी अधिक चित्रों वाली गुलेर शैली की गीत गोविन्द चित्रावली बहुत से संग्रहों में है। इस चित्र श्रृंखला के चित्रों के अध्ययन से प्रतीत होता है कि सभी चित्र एक ही चित्रकार का कार्य नहीं है। मानक द्वारा चित्रित चित्र महीन परदाज युक्त गोलाईदार चेहरों, अलंकृत एंव मृदु नारी आकृतियों, फूल, बेल–बूटों से युक्त और अलंकरणों से पृथक पहचाने जा सकते हैं जैसे

सरोवर के किनारे राधिका और दूती विषयक चित्र (संग्रह कला भवन, बनारस) और कृष्ण के आलिंगन में गोपिकाएं संग्रह एन. सी. मेहता आदि इन चित्रों पर अतिशय महीन परदाज जो चेहरे के रंग में घुलती हुई प्रतीत होती है। सभी चित्र शाहजहाँ कालीन मुगल शैली के चित्रों के समान हैं। इनमें परदाज के अतिरिक्त छाया लगाने का जो ढंग दिखाई देता है वह सभी गीत–गोविन्द चित्रों में नही मिलता। काले, गहरे भूरे या मूंगिया रंग की पृष्ठिकाओं वाले चित्रों में जो संयोजित आकृतियाँ हैं, वे मानक का कार्य नहीं लगती।

एक अन्य चित्र है जिस पर संस्कृत में मानक के नाम को अभिव्यक्त करती पुष्पिका लिखित है–

मुनि वसु गिरि सौमे संमिते विक्रमाबदे
गुणि गणित गरिष्ठा मालिनी वृत वित्ता
व्यरचयद अजभक्ता माणकू चित्रकर्त्रा
ललित लिपिविचित्रं गीत गोविन्दचित्रम।।

यह श्लोक गीत–गोविन्द चित्र पर लिखा हुआ श्लोक है इसमें दो बातें

महत्वपूर्ण है। पहली यह कि संकेतात्मक श्लोक की प्रथम पंक्ति चित्र निर्माण की तिथि इंगित करती है जो कि मुनि वसु गिरि एवं सोम के अनुसार 7871, जिसका विलोम सम्वत् 1787 बनता है अर्थात सन 1730 ई0। दूसरी पंक्ति में चित्रकार का उल्लेख माणकू चित्रकर्ता वर्णित है। 1730 ई0 में चित्रित एक गीत–गोविन्द विषयक चित्रावली जिसके अधिकांश चित्र लाहौर संग्रहालय और चण्डीगढ़ संग्रहालय में संग्रहित हैं, जो कला जगत में अत्यन्त प्रसिद्ध है। इस चित्रावली की शैली बसोहली है।

यह संस्कृत श्लोक कला विद्वानों, इतिहासकारों तथा संस्कृतविदों के बीच विवाद का विषय बना हुआ है। इस पर विद्वानों ने अपने अपने दृष्टिकोण दिए हैं।

कार्ल खण्डालावाला ने इसमें मानक को स्त्री माना है, जो अजन्मे ईश्वर की अराधना करती है। इसके विपरीत डब्लू. जी. आर्चर ने इसे मानक चित्रकार द्वारा बनाई गई गीत–गोविन्द श्रृंखला माना है।

एक मत के अनुसार बसोहली में रानी मालिनी, जो विष्णु भक्त थी तथा कला के प्रति अनुराग रखतीं थी, जिनके संरक्षण में मानक को गीत गोविन्द चित्रित करने के लिए प्रेरणा मिली। अजीत घोष के शब्दों में श्रेष्ठतम काल सम्भवतः 17 वीं शताब्दी में सुन्दरतम चित्रों में कतिपय चित्र बंगाल के अमर कवि जयदेव द्वारा लिखित गीत–गोविन्द के दृष्टान्त के रूप में उभरे हैं। यें चित्र अपनी सुन्दर रेखाओं, रंगों और प्रकाश के लिए समान रूप से अद्‌भुत हैं।

एक और विद्वान वी.सी. ओहरी की पुस्तक "पहाड़ी चित्रकला के महान चितेरे" में विजय शर्मा चम्बायल ने अपने लेख में कहा है कि इस चित्रावली की शैली बसोहली है, जिसमें सपाट रंग की पृष्ठभूमि में त्रिभुजाकार वृक्षों के मध्य राधा–कृष्ण और गोपिकाओं के विविध मनोहारी प्रणय–प्रसंग अत्यन्त कौशल के साथ चित्रित किए गए हैं। इस चित्र श्रृंखला का अन्तिम प्रसंग लाहौर संग्रहालय में सुरक्षित है, जिसके ऊपर स्वर्णाक्षरों में वही संस्कृत का श्लोक लिखित है, जो गीत गोविन्द की गुलेर चित्रावली पर अंकित है। इस श्लोक के कारण मानक चित्रकार सम्बन्धी अनेक धारणाएं कई कला विद्वानों ने बनाई हैं। बसोहली गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला का निर्माण 1730 ई0 में हुआ इसमें काई सन्देह नहीं है, परन्तु इस चित्र श्रृंखला को तैयार करने वाला माणकू नामक चित्रकार क्या पं. सेऊ का ज्येष्ठ पुत्र मानक था, यह संदिग्ध है। बसोहली गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला का चित्रकार संयोग से जिसका नाम माणकू था, पं. सेऊ का पुत्र नहीं हो सकता, क्योंकि एक ही चित्रकार द्वारा दो भिन्न शैलियों में चित्रांकन कदाचित असंभव प्रतीत होता है। चित्र संयोजन एवं रंग योजना में दोनों चित्रमालओं में भारी अंतर है। दोनों चित्रावलियां तैयार करने की तकनीकों मे समानताऐं नहीं हैं। बसोहली गीत–गोविन्द चित्रों में सुनहरे हरे रंग के कीट के पंख का अतिशय प्रयोग हुआ है, जो चित्रें में जगमगाते पन्नों का प्रभाव उत्पन्न करते हैं। गुलेर गीत–गोविन्द चित्रों में यह देखने को नहीं मिलता। गुलेर के पं. सेऊ के पुत्र मानक के हस्ताक्षरित चित्र ज्ञात हैं। हुक्का पीती नायिका और गोप बालकों का आँख मिचौली खेल। इससे स्पष्ट झलकता है कि मानक गुलेर शैली के निष्णांत कलाकार थे अब बसोहली और गुलेर गीत–गोविन्द चित्रावलियों पर एक ही प्रकार की संस्कृत के श्लोक की पुष्पिका कैसे लिख दी गई।

कार्ल खण्डालावाला ने मानक का जन्म 1715 ई0 के पश्चात माना है उनके अनुसार 1730 ई0 में मानक पन्द्रह या 16 वर्ष की आयु का होगा। इस आयु में वह बसोहली गीत–गोविन्द का चितेरा नहीं हो सकता। क्योंकि वह किसी कुशल चितेरे के अनुभवी हाथों के द्वारा बनाई गई प्रतीत होती हैं।

इनके मतानुसार 1736 ई0 में मानक द्वारा बही में जो लेख दर्ज किया गया है। उसमें उसने स्वयं को तरखाण कहा है न कि चितेरा, इसका अर्थ है वह 21 वर्ष की आयु तक चित्रकारी में निपुण नहीं था।

विजय शर्मा चम्बायल के अनुसार इस सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि 1730 ई0 की बसोहली गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला किसी प्रकार के उपहार अथवा दहेज के रूप में गुलेर दरबार पहुँची हो, क्योंकि गुलेर राजा गोवर्धन चन्द की रानी बसोहली की ही राजकुमारी थी, जो बसोहली रानी के नाम से जानी जाती थी। राजा गोवर्धन चन्द ने अपने अधीनस्थ चित्रकारों (मानक तथा उसके परिवार के सदस्यों) को इस विषय पर नई चित्रावली तैयार करने का सुझाव दिया हो, क्योंकि वह बसोहली की इस चित्रावली से प्रभावित हुआ होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि गुलेर गीत–गोविन्द की चित्र श्रृंखला के निर्माण के दौरान मानक वृद्धावस्था की ओर अग्रसर थे और श्रृंखला के अन्तिम प्रसंगों के निर्माण तक मानक चित्रांकन में सक्रिय नहीं रहे। सम्भवतः मानक के पुत्रों और भतीजों ने गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला के निर्माण की इस योजना में चित्रकार मानक के साथ उत्साह पूर्वक योगदान दिया होगा। गुलेर शैली की गीत–गोविन्द चित्रमाला के अन्तिम प्रसंगों को बनाते समय मानक के पुत्रों ने 1730 ई0 की बसोहली गीत–गोविन्द के अन्तिम प्रसंग पर लिखे संस्कृत के श्लोक को हूबहू नकल कर दिया, जिसमें संयोग से बसोहली के चित्रकार का नाम मानक उल्लेखित है।

इसके विपरीत अनेक विद्वानों ने इस पक्ष में अपने विचार व्यक्त किए हैं कि सम्भवतः मानक ही 1730 ई0 के गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला का कलाकार है जो पं. सेऊ का पुत्र है। इन विद्वानों में डा0 बी. एन. गोस्वामी, एम.एस.रन्धावा, अन्जन चक्रवर्ती आदि हैं। वास्तव में बसोहली पहाड़ी चित्रकला का प्राचीन स्थान है, जहाँ से इस शैली का प्रभाव पड़ा पहाड़ी चित्रकला के सम्भवतः सभी केन्द्रों पर पड़ा तथा सभी केन्द्रों पर बसोहली शैली से प्रभावित चित्र प्राप्त हुए हैं, यह जम्मू क्षेत्र में पड़ता था। तथा पं0 सेऊ और उसके वंशज जसरौटा के रहने वाले थे, जो इसके समीप था। जिसके कारण पं. सेऊ द्वारा चित्रित रामायण पर भी बसोहली शैली का पूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है, जिसकी रचना 1715 ई0 से 1725 ई0 तक हुई बाद के कुछ काण्ड जैसे लंका पर चढ़ाई व युद्ध काण्ड को सेऊ पूरा न कर सके और उसे उनके पुत्र मानक ने पूरा किया, उसमें बसोहली शैली से गुलेर शैली की और परिवर्तन देखते ही पता चल जाता है, इसी प्रकार भागवत पुराण जो गुलेर शैली की है, जिसकी रचना 1740 ई0 में हुई है उसमें भी यह परिवर्तन साफ देखा जा सकता है, क्योंकि उसमें कुछ बसोहली का प्रभाव है। परन्तु निरन्तर निखार व परिवर्तन के कारण गुलेर शैली में निर्मित यह चित्रश्रृंखला इस परिवर्तन का द्योतक है। इस प्रकार हमारे मत में मानक ही 1730 ई0 के गीत–गोविन्द चित्र श्रृंखला के कलाकार हैं, जो कि गुलेर वासी हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि 1739

ई0 में नादिर शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया। उस समय हर ओर बसोहली प्रभाव व्याप्त था। गुलेर पर राजा दलीप सिंह (1694–1744 ई0) का शासन था, उनके शासन काल के दौरान 1739–40 ई0 में हिन्दू कलाकार जो मुगल शैली में प्रशिक्षित थे, पंजाब पहाड़ियों पर स्थानांतरित हुए जो लाहौर तथा दिल्ली से आए थे। उनमें से कुछ के घर गुलेर में थे जो अपने घरों को लौट आए, जिसके कारण उनकी शैली का प्रभाव गुलेर शैली पर भी पड़ा।

अतः उपरोक्त सभी अध्ययनों से प्रतीत होता है कि मानक ने 1730 ई0 की गीत–गोविन्द की रचना की और बाद में मुगल शैली से प्रभावित होकर उसकी शैली में निखार आया होगा तथा उसकी शैली में परिवर्तन आ गया होगा।

गुलेर राजा गोवर्धन सिंह व प्रकाश सिंह का विवाह बसोहली में हुआ था। यह वह स्थान था जहाँ सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में कला की परम्परा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। कदाचित दलीप सिंह के समय में गुलेर में जो चित्र बनाए गए वें उन कलाकारों द्वारा ही बनाए गये थे जो बसोहली से गुलेर आए थे। 1740 के बाद गुलेर में बनाए गये चित्र अलग शैली के प्रतीत होते हैं, जिन पर मुगल शैली का प्रभाव दिखाई पड़ता है। मानक के गुलेर में कार्यरत रहने का प्रमाण इससे भी ज्ञात होता है कि उसने राजा गोवर्धन चन्द के शासनकाल के दौरान राजा से सम्बन्धित सर्वोत्तम कृतियाँ निर्मित की।

''राजकुमारी संगीत सुनते हुए'' गुलेर में यह चित्र मानक द्वारा बनाया गया है तथा एक अन्य चित्र में राजा गोवर्धन चन्द संगीत सुनते हुए। यें अत्यन्त मिलती–जुलती तस्वीर हैं। दोनों पर जो तारीख पड़ी है उसमें भी एक साल का अंतर है।

दोनों में एक सफेद चबूतरा है, जिसके पीछे मोड़दार नदी है, चबूतरे के सामने पेड़ों की कतार है। दोनों राजसी व्यक्ति एक ही तरह का हुक्का पी रहे हैं, जबकि रानी चौकी पर तथा राजा कालीन पर बैठे हैं। इन स्त्रियों को मानक ने बनाया है। इसके अलावा गुलेर रानी सखियों सहित शिकार पर जाते हुए (राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली), गीत–गोविन्द, लंका पर चढ़ाई में दो अजनबी राक्षसों को राम द्वारा माफ करना तथा भागवत् पुराण, इन सबको अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि मानक ने वेद–पुराणों, रामायण, महाभारत, गीत–गोविन्द आदि धार्मिक ग्रन्थो का अपने बुजुर्गों के बीच बैठ कर गम्भीरता से अध्ययन किया तथा उसे आत्मसात किया तभी इतनी प्रवीणता इनके द्वारा बनाए गये चित्रों में दिखाई पड़ती है। पेड़ों के प्रकार, पहाड़ी ढलानें, जलचर, प्राणी, राक्षसों के हावभाव बहुत निखार के साथ बनाए गये हैं। मानक द्वारा अन्तिम दिनों में बनाये गये चित्रों में एक चित्र कांगड़ा, जो बिहारी सतसई की व्यवस्था से लिया गया है। "राधा का जूड़ा" मानक द्वारा 1790 ई0 में बनाया गया है। इस चित्र में राधा यमुना में नहाने के बाद अपने बालों को संवार रही है।

वी. सी. ओहरी के अनुसार मानक द्वारा बनाये गए कुछ अन्य प्रमुख चित्र जिनमें नारी मुखाकृति अधिक सौम्य हैं निम्न प्रकार हैं –

1. राजा गोवर्धन चन्द तथा उसका परिवार – कार्ल खण्डालावाला, पहाड़ी मिनिएचर पेन्टिंग, 1958 ई0, ।
2. राजा बिशन सिंह का व्यक्ति चित्र ललित कला नं 11, प्लेट नं0 20.।
3. सरोवर के किनारे नायिका – डब्ल्यू. जी. आर्चर, इण्डियन पेंटिंग फ्रॉम द पंजाब हिल्स, वॉल्यूम–2 पृष्ठ 102, चित्र सं0–18. ।
4. शिव तथा पार्वती – डब्ल्यू. जी. आर्चर, इण्डियन पेंटिंग फ्रॉम द पंजाब हिल्स, वॉल्यूम–2 पृष्ठ 102, चित्र सं0–16.।
5. गुलेर के उदै सिंह संगीत सुनते हुए– कार्ल खण्डालावाला, पहाड़ी मिनिएचर पेन्टिंग, 1959 चित्र सं. 101. ।

निष्कर्ष–

उपरोक्त अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानक पहाड़ी चित्रकला के महान सृजनकार पंडित सेऊ के ज्येष्ठ पुत्र एवं गुलेर राजा गोवर्धनचन्द के राजदरबारी चित्रकार थे जिनका व्यक्तित्व काव्यात्मक तथा रोमांटिक था। वह अपने चित्रों में प्रकृति चित्रण के साथ आकृतियों के ओजस्वी चेहरों का कुशल अंकन व सौम्य रंगों का प्रयोग करते थे । मानक की सबसे बड़ी उपलब्धि गीत गोविन्द काव्य पर आधारित श्रंखला का चित्रांकन था। उक्त के माध्यम से उनकी उत्कृष्ट कला व जीवन पर प्रकाश डाला गया, जिससे माणक की अमुल्य कृतियों व पहाड़ी चित्रकला में योगदान से सामान्य जनमानस को अवगत कराया जा सके। कहा जा सकता है कि माणक गुलेर शैली के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं जिन्हे पहाड़ी चित्रकला के इतिहास मे अमर चित्रकृतियों के सृजन हेतु सदा आदर से स्मरण किया जाता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. पहाड़ी चित्रकला
लेखक – किशोरीलाल वैद्य, ओमचन्द हाण्डा
प्रकाशक – नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

2. पहाड़ी चित्रकला के महान चितेरे
सम्पादक – विश्व चन्द्र ओहरी
प्रकाशक – हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला

3. पहाड़ी चित्रकला के महान कलाकार
सम्पादक – विश्व चन्द्र ओहरी
प्रकाशक – हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी, शिमला

अंग्रेजी

1. Court Paintings of India
   Writer : Pratapaditya Pal
   Publication : Published by Navin Kumar, New york for kumar Gallery New Delhi, India
2. Indian Miniature Painting
   Writer : M.S. Randhawa
   Publication : Roli Book International, New Delhi, Allahabad, Madras
3. Art of Himachal
   Editor : Vishwa Chandra Ohri
   Publication : State Museum, Shimla-4, Department of Languages and Cultural Affairs, Himachal Pradesh
4. Kangra Paintings on love
   Writer : M.S. Randhawa